वार्तालाप-657, जम्मू, तारीख-21-10-08
Disc.CD No.657, dated 21.10.08 at Jammu

समय -03.23

जिज्ञासु - बाबा, आनेवाले समय में बाप पर कलंक लगेंगे। कलंकीधर का पार्ट चलेगा। वो कौनसी बात होगी, जिससे बाप पर कलंक लगेंगे?

बाबा - अभी बाप के ऊपर कौनसी बात से ज्यादा कलंक लग रहे हैं? (किसी ने कुछ कहा) क्राइस्ट को सूली पर क्यों चढ़ाया गया? मुरली में बताया, वो भी पवित्रता की बात थी। पवित्रता की बात पर ही सारे झगडे होते हैं दुनिया में। झगड़ों का जो मूल कारण है, वो है ही कौडी के ऊपर झगड़ा। महाभारत युद्ध में भी झगड़े का कौन कारण बना? द्रौपदी। रामायण युद्ध में भी झगडे का कारण मूल कौन बना? सीता। देवासुर संग्राम में भी लक्ष्मी कारण बन गयी। लेकिन ये कोई स्वर्ग की बातें नहीं हैं। नरक की दुनिया की बातें हैं या स्वर्ग की बातें हैं?

Student: Baba, the Father will be disgraced in the future. The part of *kalankidhar* (the defamed one) will be played. What will happen that the Father will be defamed?

Baba: Now on which issue is the Father being disgraced more? (Someone said something) Why was Christ crucified? It has been said in the *Murli*: even that was related to purity. All the disputes in the world take place on the issue of purity alone. The root cause of the disputes is only on the issue of *cowrie* (i.e. female). Even in the Mahabharata war, who became the cause of the war? *Draupadi*. Even in the war of Ramayana, who became the root cause of the fight? Sita. Also in the war between the deities and demons, Lakshmi became the cause. But these are not the issues of heaven. Are these issues of the world of hell or of heaven?

स्वर्ग में तो देवताधएँ इच्छा मात्रम् अविद्या होते हैं। उनको तो सबकुछ प्राप्ति है। नारायण की ग्लानी क्यों नहीं होती? सम्पूर्ण पार्ट है। एक ही आत्मा ऐसी है जो सौ परसेंट सम्पूर्ण बनती है। इसलिए उसकी कोई ग्लानी नहीं होती। बाकी जो भी आत्माएँ हैं, अपने पुरूषार्थी जीवन की यादगार है, जो शास्त्रों में ग्लानी ही ग्लानी दिखाई गयी है। हमारी आत्मा जब तक सम्पन्न नहीं बनती, हमारे अंदर कचडा संकल्प आते हैं, तो हमारा वायब्रेशन ही गंदा बनाए जाते हैं। और हमारा ही प्रभाव दूसरों पर पड़ जाता है जो वो हमारी ग्लानी करते है। हम लक्ष्मी-नारायण जैसे बन जावेंगे, सम्पन्न आत्मा बन जावेगी, तो हमारे सामने कोई ग्लानी कर सकेगा? कोई ग्लानी नहीं करेगा। इसलिए अगर कोई ग्लानी करते भी है, तो अपनी ही कमी समझ करके, क्या कर लेना चाहिये? एबसोर्ब कर लेना चाहिये। समा लेना चाहिये। हमारे 63 जन्मों का हिसाब-किताब अभी चल रहा है। पूरा नहीं हुआ है। इसलिए हमको सहन करना पड़ता है।

In heaven, deities do not have any knowledge of desires (*ichcha maatram avidya*). They have all the attainments. Why isn't Narayan defamed? (Because) it is a complete part. There is only one such soul who becomes 100 percent complete. That is why, he is not defamed. As regards all the other souls, it is the memorial of their life of making special effort for the soul, which has been shown in the scriptures as defamation. Until our soul becomes complete, until dirty thoughts come to our mind, they certainly make our vibrations dirty and it is our vibrations which

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

influence the others, because of which they defame us. If we become like Lakshmi-Narayan, when we become a complete soul, then will anyone be able to defame us? Nobody will defame us. That is why even if anyone defames us, we should think it to be our shortcoming; what should we do? We should absorb it (the defamation). We should assimilate it. The *karmic* account of our 63 births is still going on. It is not yet over. That is why we have to tolerate.

और भी बताया, कृष्ण काला, कृष्ण गोरा। काले कृष्ण की ग्लानी होती है या गोरे कृष्ण की ग्लानी होती है? कृष्ण जब गोरा बन जाता है तो नारायण कहा जाता है। बच्चा बुद्धि है। पूरा ज्ञान बुद्धि में समाया नहीं है, उठाया नहीं है। तो अधूरापन है। कमी है। अपनी ही कमजोरी है जो माया के रूप में आती है। विघ्नों के दीवाल के रूप में खडी हो जाती है। इसलिए सब बच्चों को बोला, तुम बच्चें बनते हो कलंकीधर के बच्चे, कलंक धारण करनेवाले।

And it has also been said, Krishna is dark, Krishna is fair. Is it the dark Krishna who is defamed or is it the fair Krishna who is defamed? When Krishna becomes fair, he is called Narayan. He has a child-like intellect. The complete knowledge has not assimilated, grasped by the intellect. So, there is imperfection. There is a shortcoming. It is our own shortcoming, which comes in the form of *Maya*. It stands like a wall of obstacles. That is why all the children have been told, "You children become the children of the *kalankidhar*, those who assimilate disgrace.

समय - 08.51

जिज्ञासु - बाबा, मुरली में आता है ना, बाप को याद करो और घर को याद करो। बाप तो परमधाम छोड के नीचे आए है मुकर्रर रथ में। हम अब घर परमधाम को समझें या मुकर्रर रथ को समझें?

बाबा - जो बाप आया है नीचे, तो किसी घर में रहता है या जंगल में रहता है? जिस शरीर में आया है वो शरीर ही उसका घर है। तो घर को भी याद करो और बाप को भी याद करो और स्वर्ग को भी याद करो। बाप का मिलना होता है तो खुशी होती है या दु:ख होता है? स्वर्ग में ही तो खुशी होती है। खुशी की दुनिया को ही तो स्वर्ग कहा जाता है। तो वो हमारा स्वर्ग भी है, हमारा सुखधाम भी है, हमारा घर भी है और हमारा बाप भी है। एक तरफ कहते है मामेकम् याद करो और दूसरी तरफ बच्चों को मुंझाय देते है कि घर को याद करो, सुखधाम को याद करो, बाप को याद करो। तो बच्चें मूंझ जाते है कि तीन-तीन को याद करें, फिर एक तरफ कहते है मामेकम् याद करो। लेकिन अलग-अलग बात नहीं है। एक ही बात है।

Time: 08.51

Student: Baba, it is mentioned in the *Murlis*: remember the Father and remember home, isn't it? The Father has left the Supreme Abode and has come down in the appointed chariot. Now should we consider the Supreme Abode or the appointed chariot as the home?

Baba: Does the Father, who has come down, live in a house or in a jungle? The body in which He has come, that body indeed is His home. So, remember the home as well as the Father and remember heaven as well. When we meet the Father, does it bring happiness or sorrow? Happiness is experienced only in heaven. Only the world of happiness is called heaven. So, he is our heaven as well as our abode of happiness; he is our home as well as our Father. On the one side, He says, 'Remember Me alone' and on the other side He confuses the children by saying, remember the home, remember the abode of happiness, remember the Father. So, children are

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

confused, should we remember three things? Then on the other side He says, 'Remember Me alone'. But these are not different things. They are the same thing.

जिज्ञासु - बाबा, जब बाप की प्रत्यक्षता होगी तो सेवा बहुत जोर से चलेगी। तो क्या बाबा बच्चों को तपस्याधाम से वापस फिर दुनिया में भेज देंगे?

बाबा - तपस्या अधूरी होती है, तब इच्छाऐं पैदा होती है या जब तपस्या सम्पन्न बन जाती है तब इच्छाऐं पैदा होती हैं? (किसी ने कुछ कहा) जो अधूरी तपस्या होती है तब ही इच्छा पैदा होती है, हम दूसरों के ऊपर कंट्रोल करें। नहीं तो बाप हमको खुद यहां सिखाने आया है वो रूप धारण करके 'बच्चों आइ अम योर मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट'। ये तथा-कथित जो बेसिक नालेज लेने वाले है उनके अंदर कंट्रोल करने की इच्छा जागृत हो गइ या खत्म हो गइ? (किसी ने कहा - जागृत हो गइ।) 'तप कर राज, राज कर नरका।' ये शूटिंग कहां होती है? ब्राह्मणों की दुनिया में ही ये शूटिंग होती है। बार-बार तपस्या करते है, तपस्या की ऊँची स्टेज पर पहुंचते है। समझते है हमारी तपस्या पूरी हुई। और उस अधूरी तपस्या को ही पूरी तपस्या समझ लेते हैं। समझते हैं ब्रह्मा बाबा हमको राजभाग देकर के चले गए।

Student: Baba, when the revelation of the Father takes place, the service will take place at a fast pace. So, will Baba send the children back from the abode of *tapasya* to the (outside) world?

Baba: Do the desires emerge when the *tapasya* is incomplete, or do the desires emerge when the *tapasya* is completed? (Someone said something) It is only when the *tapasya* is incomplete, the desire 'we should control the others' emerges. Otherwise, the Father has Himself come here to teach us in the form of (the one about which He says), 'Children, I am your most obedient servant'. Has the desire to control (others) emerged or vanished within those who obtain the so-called basic knowledge? (Someone said – It has emerged) '*Tap kar raj, raj kar narka'* (one obtains kingship through *tapasya* and after achieving kingship he misuses it to reach hell) Where does this shooting take place? This shooting takes place in the very world of Brahmins. We do *tapasya* repeatedly and reach the high stage of *tapasya*. We feel that our *tapasya* is over and we consider this incomplete *tapasya* alone to be the complete *tapasya*. We feel that Brahma Baba has left after giving us the kingship.

<u>समय - 13.46</u>

जिज्ञासु - बाबा, कई बच्चे एडवांस में आने के बाद समझ लेते हैं हम जन्म-जन्मांतर के राजाऐं है। हम झुकने वाले नहीं, झुकाने वाले हैं। अपना ही आर्डर करते हैं घर और बाहर। आनेवाले भविष्य में उनका कौनसा पार्ट होगा?

Time: 13.46

Student: Baba, many children, after entering (the path of) advance (knowledge), feel: we are kings for many births. We are not the ones to bow; we are the ones who will make others bow. They impose their orders at home as well as outside. What will be their part in future?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा - बाबा ने तो कहा है, जो यहां सहन करेंगे, वो वहां सहन करावेंगे। जो यहां डायरेक्शन चलावेंगे, उनको वहां डायरेक्शन पर चलना पडेगा। यहां हम ब्राह्मण सेवाधारी है या राजा हैं? (किसी ने कहा - सेवाधारी।) हम अभी राजा नहीं बन गए हैं। ये संगमयुग राजाई करने का युग नहीं है। ये तो सेवा करने का युग है, हम सेवाधारी हैं। तो सेवा का भाव बुद्धि में रहना चाहिये। कोइ के उपर आर्डर चलाने का भाव नहीं होना चाहिये। उल्टा ज्ञान उठाया हुआ है कि यहां हम छत्तीस प्रकार के भोग खाऐंगे, ये संस्कार डालेंगे अच्छा-अच्छा भोजन करने के, अच्छा-अच्छा कपडे पहनने के, अच्छे-अच्छे मकान में रहने के तो ये संस्कार हमारे नई दुनिया में भी जावेंगे। ये उल्टा ज्ञान हो गया। बाप ने तो हमको सिखाया है, यहां जितना त्याग करेंगे उतना वहां जन्म-जन्मांतर का भाग्य बनेगा। अभी तुम बनवास में हो। बनवास में अच्छा पहननना, अच्छा खाना, अच्छा मकान, ये होता है क्या? नहीं।

Baba: Baba has said, those who tolerate here (in the Confluence Age) will make others tolerate there (in the broad drama). Those who will order directions here, they will have to follow directions there. Are we Brahmins *sevadharis* (servers) or kings here? (Someone said – *sevadharis*) We have not yet become kings. This Confluence Age is not an Age to rule (upon others). This is an Age for doing service; we are servers. So, the feeling of service should remain in our intellect. We should not have the feeling of issuing orders to anyone. They have interpreted the knowledge in an opposite way (thinking) that, if we eat 36 kinds of *bhog* (food items) here, if we take up these *sanskars* of eating good food, of wearing good clothes, of living in good houses, then these *sanskars* of ours will be carried to the new world as well. This is knowledge (imbibed) in an opposite way. The Father has taught us , the more we sacrifice here, the more we will earn fortune for many births there. Now you are in exile (*banwas*). Does anyone wear nice clothes, eat good food, and live in good houses during exile? No.

समय - 16.15

जिज्ञासु - बाबा, जो राजयोग सीखते हैं ना, उसकी क्या पहचान होगी?

बाबा - सीखने वालों में परसेंटेज है। कोइ वन परसेंट राजयोगी बने है। कोइ 99 परसेंट राजयोगी बने हैं। अव्यक्त वाणी में तो बताया, कि हमको खुद अपना परिचय न देना पड़े, दूसरे भी हमारा परिचय न दें लेकिन हमारे चेहरे से, हमारी चलन से, हमारी भाषा से, हमारे वायब्रेशन से, हमारी दृष्टि से दूसरों को स्वत: ही पता लग जाए कि ये राजयोगी हैं।

Time: 16.15

Student: Baba, what will be the indication of those who learn *Rajyog* ?

Baba: There is percentage among those who learn. Some have become one percent *Rajyogis*. Some have become 99 percent *Rajyogis*. It has been said in an *avyakta vani* , there should not be the need to give our introduction ourselves, the others should not give our introduction either, but others should automatically come to know through our face, through our behavior, through our language, through our vibrations, through our vision that ' he is a *Rajyogi*'.

समय - 20.39

जिज्ञासु - बाबा, शिवबाबा ने मुरली में बाला है कि मैं जो हूं, जैसा हूं, उस रूप में मुझे जान लो। तो एडवान्स में आने से हमें ये पता चला है कि शिवबाबा का रूप कौनसा है। तो हम

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

उसको याद करते है तो हमें शांति और शक्ति की अनुभूति होती है। लेकिन बेसिक में ऐसा नहीं था। बेसिक में बहनें कहती थी कि परमधाम में शिवबाबा को इमर्ज करो और अपने आप को आत्मा समझ कर उससे योग लगाओ। जब हम ऐसा करते थे तब भी हमें शांति और शक्ति की अनुभूति होती थी। तो बाबा ये कैसे?

Time: 20.39

Student: Baba, Shivbaba has said in *Murli*: you recognize Me in whatever form I am, whichever form I am. So, after coming in advance (knowledge) we have come to know, what is the form of Shivbaba. So, when we remember Him we experience peace and power. But it was not the case in basic (knowledge). In the basic (knowledge), sisters used to ask us to emerge Shivbaba in the Supreme Abode *(Paramdham)* and to consider ourselves to be souls and to connect our intellect with Him. Even when we did like that, we used to experience peace and power. So, Baba how is it so?

बाबा - तब हमें शांति की और शक्ति की अनुभूति नहीं होती थी?

जिज्ञासु - होती थी।

बाबा - होती थी। और अभी?

जिज्ञासु - अभी भी होती है।

बाबा - अभी भी होती है फिर अंतर क्या है?

जिज्ञासु - कहने का मतलब है कि अब बाप परमधाम से उतर कर नीचे आया है। तो हम तो परमधाम में याद करते थे बेसिक में।

बाबा - परमधाम में याद करने के लिए कहां बोला है।

जिज्ञासु - बाबा, जो शक्ति मिलती है वो यहां भी एक जैसी है ओर वहां भी एक जैसी है।

बाबा - जो शक्ति मिलती है वो ज्ञान कि धारणा से मिलती है या स्वत: ही मिल जाती है।

जिज्ञासु - धारणा से मिलती है।

Baba: Did we not used to experience peace and power then?
Student: We used to.
Baba: We used to. And now?
Student: Even now we experience it.
Baba: Even now we experience. Then, what is the difference?
Student: I mean to say, now the Father has come down from the Supreme Abode. So, we used to remember (Him) in the Supreme Abode in the basic knowledge.
Baba: We have we been asked to remember (Him) in the Supreme Abode.
Student: Baba, the power that we receive (through remembrance) is same here and there.
Baba: The power that we receive, is it received through the power of *dharna* (inculcation) or automatically?
Student: We receive it through *dharna*.

बाबा - हां, पहले तो ज्ञान चाहिए ना। ज्ञान जितना धारणा में बैठता जायेगा उतनी शक्ति मिलती जायेगी। गुड जितना डालेंगे उतना मीठा होगा। शक्ति लेने का तरीका ही ये है (किसी ने कहा - याद) नहीं। तन, मन, धन सब तेरा। जितना तन की शक्ति लगायेंगे, जितना धन की शक्ति लगायेंगे ईश्वरीय सेवा में, किसी को देने की बात नहीं है लेकिन तन, मन, धन की

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

शक्ति का उपयोग ईश्वरीय सेवा में हो उतनी खुशी बढेगी। और बाह्मणों का खजाना ही कौनसा है? खुशी।

जिज्ञासु - एक्युरेट तो नहीं है ना वो याद।

बाबा - अब, एक्युरेट जो याद करेगा वो तो अव्वल नम्बर नारायण बन जायेगा। उनकी एक्युरेट याद हो जाएगी क्या? याद भी तो नम्बरवार होगी। और एक्युरेट याद करनेवाले तो आठ ही निकलेंगे।

Baba: Yes, first knowledge is required, isn't it? The more we go on inculcating knowledge, the more we will keep receiving power. The more we add sugar (sweetness), the sweeter the food will become. This is the only method of obtaining power (Someone said – remembrance) No. Body, mind, wealth, everything is Yours. The more we invest the power of our body, the more we invest the power of wealth in the Godly service, it is not a case of giving it to anyone, but the more the power of our body, mind and wealth is invested in the Godly service, our happiness will increase to that extent. Moreover, what is the treasure of Brahmins? Happiness.

Student: That remembrance is not accurate, is it?

Baba: Well, the one who remembers accurately will become no.1 Narayan. Will their remembrance become accurate? The remembrance will also be number wise. And those who make accurate remembrance will be only eight.

जिज्ञासु - बाबा, लगाव, झुकाव की क्या-क्या निशानी है?

बाबा - बार-बार बुद्धि उसी तरफ जाएगी। बाबा की याद में बैठो, वहां से बुद्धि हट करके कहां जाएगी? जहां लगाव होगा, जहां झुकाव होगा वहीं बुद्धि झुकती रहेगी। और लगाव-झुकाव सिर्फ मन-बुद्धि से भी नहीं होता है। लगाव-झुकाव होता ही तब है, जहां हमारा तन होगा वहां हमारा मन होगा। जहां हमारा धन होगा वहां हमारा मन होगा। क्योंकि धन भी तो तन से ही कमाया जाता है।

Student: Baba, what is the indication of attachment or inclination (towards someone)?

Baba: The intellect will go in the same direction (to what we are attached) again and again. If you sit in the remembrance of Baba, the intellect will move away and go in which direction? The intellect will go on inclining towards the person or thing to which we are attached, inclined. And the attachment and inclination is not just through the mind and intellect. Attachment and inclination happens only when; our mind goes wherever our body will be, our mind goes wherever our wealth will be because, even the wealth is earned through the body indeed.

<u>समय - 27.53</u>

जिज्ञासु - बाबा, ज्ञान में अभिमन्यु का पार्टधारी (कौन है)?

बाबा - जो रीसेंट वी.सी.डीज है वो सुनते ही नही। एक साल से ये प्वाइन्ट चलता चला आ रहा है। शास्त्रों में जो नाम है, काम के आधार पर है। नाम ही है अभिमन्यु। उसको अभिमान था। किस बात का अभिमान था? कि भगवान मेरा मामा है, मैं भगवान का भांजा हूं। और अर्जुन जैसा महारथी मेरा बाप है। क्या? जिसका रथ कौन चलाता है? भगवान जिसका रथ चलाता है। मैं उसका बेटा हूं। परंतु ये ज्ञान का अभिमान हुआ या अज्ञानी का अभिमान हुआ। ये तो अज्ञानियों का अभिमान है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 27.53
Student: Baba, who is the one who plays the part of *Abhimanyu* (a character in the epic Mahabharat) in knowledge?
Baba: You do not listen to the recent VCDs at all. This point is being discussed since last one year. All the names in the scriptures are based on the tasks performed (by them). The name itself is *Abhimanyu*. He had ego (*abhimaan*). He had ego of what? (He was egotistic) that God is my maternal uncle; I am God's nephew. And a *maharathi* (great warrior) like Arjun is my father. What? Who drives his (Arjun's) chariot? I am his son of the one whose chariot is driven by God. But is it a pride of knowledge or ego of ignorance? It is an ego of ignorant ones.

भगवान ने देह और देह के संबंधियों का त्याग बताया हुआ है। भगवान तो बताते है देह को भी भूलना है, देह के पदार्थों को भी भूलना है और देह के संबंधियों को भी भूलना है। निरभिमानी बनना है। कोइ अहंकार नहीं। मैं आत्मा मेरा बाप परमपिता परमात्मा। इस आत्मा अभिमान में, परमात्मा अभिमान में रहना है। जो परमात्म अभिमान में रहता है, परमात्मा मेरा बाप है, वो परमात्मा की प्रापर्टी का अभिमान करेगा या लौकिक संबंधियों की दात का अभिमान करेगा।
God has mentioned about the renouncement of the body and the bodily relationships. God says, we have to forget the body as well as the things related to the bodyand we have also to forget the relatives of the body. We have to become egoless. There should not be any ego. I am a soul; my father is the Supreme Father Supreme Soul. We have to remain in this soul consciousness, in this consciousness of the Supreme Soul (being our father). Will the one who remains in the consciousness of the Supreme Soul thinking that the Supreme Soul is my Father, feel proud of the property of the Supreme Soul or will he feel egotistic of the gift of *lokik* relatives?

परमात्मा की प्रापर्टी है ज्ञान। तो जो ज्ञान है, उस ज्ञानी परिवार में पैदा तो हुआ। लेकिन उस ज्ञान का अभिमान नहीं आया। उस ज्ञान को उतना महत्व नहीं दिया कि विधिवत् ज्ञान को ले, विधिवत् भट्ठी करे, विधिवत् रोज क्लास करे, रेग्युलर रहे, क्लास में पंक्च्युल रहे। यहीं तो विधि है। और उस विधि को अपनाया नहीं तो सिद्धि होगी क्या? जीवन में कोई न कोई ऐसी अडचन आ जावेगी जो असफलता हाथ लगती है। नहीं तो भगवान का तो नारा है 'विजय तुम्हारा जन्म-सिद्ध अधिकार है'। जो जन्म-सिद्ध अधिकार होता है वो इसी जन्म में प्राप्त होना चाहिये। शरीर छोड करके अगले जन्म में प्राप्त हो, उसको नहीं कहेंगे जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त हुआ।
The property of the Supreme Soul is knowledge. So, about the knowledge; he was no doubt born in the family of the knowledgeable ones. But he did not feel proud of that knowledge. He did not give so much importance to that knowledge that he should obtain the knowledge properly, do *bhatti* properly, attend the classes properly everyday, remain regular, remain punctual in the class. This is the procedure. And if we did not adopt that procedure, then will we achieve success? Some or the other such an obstacle will emerge that leads to failure. Otherwise, God's slogan is 'victory is your birthright'. The birth right should be achieved in this very birth. If it is achieved after leaving the body in the next birth, it will not be said that the birth right is received.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु - बाबा, जो बच्चें डायरेक्ट बाप से दृष्टि लेते है उन्हें अनुभव होता है कि हमें शांति मिल रही है, शक्ति मिल रही है, पावर मिल रही है और बाबा उससे विकर्म भी विनाश होते है क्या?

बाबा - ऐसे तो फिर सारी सृष्टि के विकर्म विनाश हो जाए। ऐसे थोडे ही है कि आंख से हम जिसको देखते है, उस देखने से ही हमारे पाप कर्म भस्म हो जायेंगे। आंख से जिसको देखा वो याद आता है, हाथ से जिसको स्पर्श किया वो स्पर्श याद आता है, कान से जिसकी बातें सुनी वो याद आता है। वो याद से हमारी मन-बुद्धि रूपी आत्मा सुधरेगी। याद मन-बुद्धि आत्मा करती है कि देह करती है। आत्मा, आत्मा को ही मन-बुद्धि कहा जाता है। तो पवित्र बनने के लिए तो याद चाहिये। ऐसे नहीं कि दृष्टि लेने से ही कल्याण हो जावेगा।

Student: Baba, the children who take *drishti* from the Father directly feel that they are receiving peace, power and Baba, do the sins burn into ashes through that as well?

Baba: In this way the sins of the entire world will be destroyed. It is not that, the one whom we see through our eyes, our sins will be burnt into ashes just by seeing him. We remember the one who we see through the eyes; we remember the touch of the person, whom we touched through the hands; we remember the person whose words we heard through the ears. Our mind and intellect-like soul will reform through that remembrance. Is it the mind and intellect-like soul that remembers or is it the body that remembers? It is the soul, the soul alone is called the mind and intellect. So, in order to become pure, remembrance is required. It is not that we will be benefitted just by taking *drishti.*

<u>समय - 40.47</u>

जिज्ञासु - बाबा, इसका क्वेश्चन है, एन.एस् में जाने के लिए नष्टोमाहा होना चाहिये। इसके अलावा कोइ और विशेषता भी चाहिये?

बाबा - नयी दुनिया बनाई जाए, चाहे नयी दुनिया का फाउन्डेशन डाला जाए। उसमें मुख्य पुरूषार्थ क्या देखा जाएगा? आखरी पेपर क्या है? नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। तो ज्ञान में निकलते समय ही फाउन्डेशन के समय जो जितना नष्टोमाहा होता है, सारा पुरूषार्थी जीवन उसका उतना ही नष्टोमोहा होकर के चलता है। तो ऐसी आत्माऐं क्यों नहीं चुनी जाऐंगी। बाबा के बच्चे बने और बच्चे बन-बनके भी घर-घर की बीमारी लगी रहे, घर जाना है-2, तो लक्ष्य कहां जाने को है? बाबा के घर जाने का है या जहां से आए है वहीं वापस जाने का है? टाइम वेस्ट हो रहा है।

जिज्ञासु - बाबा, बात तो बहुत सही है लेकिन उस पुरूषार्थ, वहां तक नहीं पहुंचे अभी कि वापस न जाए।

Time: 40.47

Student: Baba, she has a question. We should be victorious over attachment in order to go to NS. Is any other specialty also required?

Baba: Whether the new world is created, or the foundation for the new world is laid, what main special effort for the soul *(purusharth)* will be seen in it? What is the last paper? *Nashtomoha smritilabdha* (the one who conquers attachment gains the awareness of the self and the Father.) So, the more someone is a conqueror of attachment at the time of entering the path of knowledge, at the time of foundation, the more his entire life of making special effort for the soul continues as a conqueror of attachment. So, why won't such souls be selected? We became

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba's children and even after becoming children, if we remain inflicted with the disease of (going) home, 'I want to go (*lokik*) home, I want to go (*lokik*) home' then our target is to go where? Is our aim to go to Baba's home or to go back to the place from where we came? The time is being wasted.
Student: Baba, what you say is correct, but we have not reached the stage of making such *purusharth* that we may not go back (*lokik*) home.

बाबा - वेयर इज द विल, देयर इज द वे। बुद्धि में लक्ष्य है, इच्छा है, अगर तीव्र इच्छा है तो जरूर पूरी होती है। कर्मों की भी यही थ्योरी है। कोइ भी जीवन हो, द्वापर युग के 21 जन्म हो या कलियुग के 42 जन्म ही हो, जिस जन्म में जो कर्म तीव्र इच्छा से किया जाता है, उस कर्म की सिद्धि तीव्रता के आधार पर उसी जन्म में भी हो सकती है और अगले के नजदीक जन्मों में भी हो सकती है। नहीं तो लास्ट जन्म तो है ही है। 63 जन्मों में हमने जो भी इच्छाऐं की है वो इस लास्ट जन्म में तो सब पूरी होती ही है।
Baba: Where there is the will, there is the way. If there is an aim, a desire, a strong desire, then it definitely fulfills. The same theory is of Karmas (actions). Whichever birth it may be, whether it is the 21 births of the Copper Age, or it may be the 42 births of the Iron Age, whatever action is performed in whichever birth with a strong desire, that karma can be accomplished in the same birth or in the next few births as well, based on the speed (of *purusharth*). Otherwise, the last birth is anyway there. Whatever desires we have made in the 63 births, they are definitely fulfilled in this last birth.

समय - 47.15

जिज्ञासु - बाबा, जो पद मिलता है वो पूरे पुरूषार्थ को देखके मिलता है आदि से लेके अंत तक? जो उंच पद या नीच पद मिलता है वो पूरे पुरूषार्थ को देखके मिलता है?
बाबा - फाउन्डेशन को लेके बनता है। जब ज्ञान में आए थे, उस समय हमारी जैसी अवस्था थी, फाउन्डेशन के टाइम, वो ही फाउन्डेशन के टाइम का आदि का पुरूषार्थ अंत तक हमारा जीवन बनाता रहता है। आदि में ज्ञान में आए जो ढीले-ढाले रहे तो सारा पुरूषार्थी जीवन ढीला-ढाला रहता है। आदि में आने के टाइम का सारा मदार है पुरूषार्थी जीवन का। फाउन्डेशन बेला का बहुत महत्व होता है।
Time: 47.15
Student: Baba, do we achieve a post on the basis of the entire *purusharth* from the beginning to the end? Do we achieve a high or low post on the basis of our entire *purusharth*?
Baba: It is on the basis of the foundation. Whatever was our stage at the time when we had entered the path of knowledge, at the time of the foundation; the same *purusharth* of the time of foundation, of the beginning goes on building our life till the end. Those who remained loose when they entered the path of knowledge in the beginning, then their entire *purusharthi* life remains loose throughout. The entire *purusharthi* life is dependent on the time of the beginning (when we entered knowledge). There is a lot of importance of the time of foundation.

समय - 52.48

जिज्ञासु - बाबाजी, ये आत्मा आदि सब कैसे बनी है?
बाबा - बनी?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु - क्या-क्या जरूरी है, कोई पापी आत्मा.....

बाबा - आत्मा अनादि है या बनाई जाती है?

जिज्ञासु - अनादि है ना।

Time: 52.48
Student: Babaji, how are these souls etc. created?
Baba: Created?
Student: What all is required, for some soul is a sinful soul….
Baba: Is a soul eternal or is it created?
Student: It is eternal, isn't it?

बाबा - तो अनादि है तो बनने का सवाल खत्म। या तो अनादि कहे, या तो बनी कहे। हां, ये कह सकते है कि आत्मा में जो पार्ट भरा हुआ है अनेक जन्मों का अविनाशी, वो कैसे और कब भरा गया? संगमयुग में। संगमयुग में हर आत्मा की मुट्ठी में उसका भाग्य रखा हुआ है। जो भी ज्ञान में आया, उसकी मुट्ठी में उसका भाग्य है। ज्ञान के अनुकूल जीवन बिताता है तो जन्म-जन्मांतर का भाग्यवान बनता है और देहधारी मनुष्यों की मत पर चलता है, उनकी बातें मानकर जीवन में चलता है या मनमत पर चलता है तो उनकी मुट्ठी में आया हुआ जो भाग्य है वो खिसकता रहता है, दुर्भाग्यशाली बना देता है।

Baba: So, when it is eternal, the question of its being created is finished. Either you call it eternal or you say that 'it was made'. Yes, you can ask, how and when was the imperishable part of many births recorded in the soul? In the confluence Age. In the Confluence Age, the fortune of every soul (person) is in his own hands. Whoever has come in knowledge, his fortune lies in his own hands. If he spends his life according to the knowledge, then he becomes fortunate for many births and if he follows the directions of the bodily human beings, if he accepts and follows their versions in his life, or if he follows his own mind, then the fortune which came in his hands keeps slipping away; it makes him unlucky.

तो अभी संगमयुग में हर आत्मा की अपनी मुट्ठी में भाग्य और दुर्भाग्य रखा हुआ है। इसलिए कहते है आत्मा अपना शत्रु और आत्मा अपना मित्र अभी है। चाहे तो अपनी आत्मा से शत्रुता करे। आत्मा से शत्रुता नहीं करता, आत्मा के पार्ट से शत्रुता हो जाती है। अभी चेहरे तैयार हो रहे है। कोई राक्षसों के चेहरे तैयार हो रहे है, कोई देवताओं के चेहरे तैयार हो रहे हैं। कोई देवियों के चेहरे तैयार हो रहे हैं, कोई राक्षसी सूर्पनखा, पूतना के चेहरे तैयार हो रहे हैं। तो आत्मा नहीं बनाई जाती। या कब बनी, ये प्रश्न नहीं पैदा होता। हां, ये कह सकते हैं कि आत्मा का पार्ट जो अविनाशी भरा हुआ है, वो कब बना? और किसने बनाया? संगमयुग में बना और आत्मा ने अपना पार्ट अपने आप ही बनाया। ऐसे नहीं भगवान एक-एक का भाग्य बनाता है।

So, now in the Confluence Age every soul's fortune and misfortune lies in his own hands. That is why it is said, 'A soul is its own enemy and its own friend **now**'. If you want you may develop enmity with your soul. You do not develop enmity with the soul, but you develop enmity with the part of your soul. Now the faces are becoming ready. Some faces of demons are becoming ready and some faces of deities are becoming ready. Some faces of female deities *(deviyan)* are becoming ready; some faces of demoniac *Soorpanakha*, *Pootna* are becoming ready. So, a soul is not created. Or the question of when was it created doesn't arise. Yes, we can say, when was

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

the imperishable part of souls recorded? And who enabled its recording? It was recorded in the Confluence Age and the soul recorded its part on its own. It is not that God creates the fortune of each and every one.

जिज्ञासु - ये ही बोला है ना बाबा, कि ये बना-बनाया ड्रामा चल रहा है।

बाबा - ठीक है। बना-बनाया तो चल रहा है। लेकिन बना कौन रहा है? हैं? कौन बना रहा है? भगवान आके तुम्हारे कान में कह रहा है कि ऐसा करो, ऐसा मत करो और वैसा ही करते?

जिज्ञासु - जैसे बोला है ना बाबा कि सतयुग में जिसका लक्ष्मी-नारायण का पार्ट होगा, वही जा के करेंगी।

बाबा - तुम्हें मालूम है किसका होगा?

जिज्ञासु - यही तो बात है ना।

बाबा - हां, बात है तो तुम बनाओ ना। निगेटिव संकल्प क्यों करते हो अपनी आत्मा के लिए। अपनी आत्मा के लिए पॉजिटिव संकल्प करो।

Student: Baba, it has been said, this is a pre-determined drama, hasn't it?
Baba: It is correct. That what is pre-determined (drama) is going on. But who is making it? Hum? Who is making it? Is God coming and telling in your ears, do like this, don't do like this and you do it that way?
Student: Baba, for example, it has been said, the ones who are destined to play the part of Lakshmi-Narayan will play that very role.
Baba: Do you know whose will it be?
Student: This is the issue, isn't it?
Baba: Yes, if this is the issue, then you make (your part), why don't you? Why do you make negative thoughts for your soul? Make positive thoughts for your soul.

जिज्ञासु - शरीर के लिए बोल रहे हैं, जैसे कि जो पापी आत्मा है, जैसे किसी का पार्ट सतयुग में 5 जन्मों की लिखी है या 21 जन्मों की लिखी है, 84 जन्म पूरे नहीं होते है, वो आत्मा पूरे 84 जन्म कैसे लेगी?

बाबा - किसी को मालूम है कि किसके 84 जन्म होंगे किसके नहीं होंगे? मालूम है?

जिज्ञासु - बोलते है कि जो.....

बाबा - अरे, हम जो पूछ रहे है उसका जवाब दो।

जिज्ञासु - उसके बारे में तो किसी को पता नहीं है।

Student: I am saying about the body. For example, the one who is a sinful soul; for example, someone is destined to play a part for 5 births or 21 births in the Golden Age, if he does not take complete 84 births, then how will that soul take complete 84 births?
Baba: Does anyone know who will take 84 births and who will not? Do you know?
Student: It is said that those…..
Baba: Arey, reply to what I am asking.
Student: Nobody knows about it.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा - जब किसी को पता नहीं है तो अच्छे संकल्प करो ना। अच्छा करना भगवान सिखाता है या बुरा करना सिखाता है। और अपनी आत्मा के लिए ही अच्छा नहीं सोच सकते तो दुनिया के लिए क्या अच्छा सोचेंगे। पहले तो अपने से प्यार होता है। आत्मा सबसे जास्ति किसको प्यार करती है? अपने से प्यार करती है। फिर पति से प्यार होता है, पिता से प्यार होता है, पत्नी से प्यार होता है। बाकी पहला-पहला प्यार तो अपने से ही होता है। इसलिए जितनी भी आत्मा मात्र है, मनुष्यात्माऐं तो सब, उनको कहा जाता है स्वार्थी। स्व माने अपने रथ माने शरीर रूपी रथ के लिए मरने वाली होती है। आत्मा जब सम्पन्न बन जाती है, ये पक्का निश्चय हो जाता है कि मेरा पार्ट मुझे बहुत पसंद है। उसे दूसरे का पार्ट पसंद नहीं आएगा। मेरा ही पार्ट मेरे को बहुत पसंद है। यही पार्ट मेरा होना चाहिये, यही मैं चाहता था। तो उसको जो पाना था सो पा लिया।

Baba: When nobody knows then create good thoughts, won't you? Does God teach you to do good or to do bad? And if you cannot think good about your soul then how will you think good about the world? A soul loves itself first. Whom does a soul love the most? It loves itself. Then it loves the husband, it loves the father, it loves the wife. However, first of all, it loves itself. That is why all the souls that are there, all the human souls that are there, they all are called selfish (*swaarthi*).'Swa' means our, 'rath' means chariot-like body, the soul has a nature to die for itself. When the soul becomes complete, when it develops firm faith (to think): I like my part a lot. He will not like others' part. (He will think) I like only my part very much. This should be my part indeed; I wanted only this. So, he achieves whatever he wanted.

जिज्ञासु - बाबा, कैसटों में बोला है कि सतयुग में एक भाषा होगी, एक परिवार होगा। ये फाउन्डेशन तो संगमयुग में चलेगा ना; लेकिन फिर मुरली में दो-दो भाषाऐं कैसी बोली जाती है? जैसे कभी इंग्लिश भी आती है, गुड मॉर्निंग, या स्टुडेन्ट। ये तो हिंदी में रहने चाहिये ना। विद्यार्थी, नमस्ते। ये दो-दो भाषाऐं बाबा फिर कैसे सिखाई जा रही है संगमयुग में?

Student: Baba, it has been said in the cassettes that there will be one language, one family in the Golden Age. This foundation will be laid in the Confluence Age, won't it? But then, why are two languages spoken in the *Murlis*? For example, sometimes English is used as well, like the words 'good morning', or 'student'. These should be said in Hindi, shouldn't they? *Vidyarthi* (student)*, namast*e. Baba, then why are two languages being taught in the Confluence Age?

बाबा - बाप विश्व कल्याणकारी बन करके आया हुआ है या सिर्फ हिंदुस्तान कल्याणकारी बन करके आया हुआ है? (किसी ने कहा - विश्वकल्याणकारी) अगर सिर्फ एक ही भाषा बोले तो विश्व के लोग, विश्व भाषाओं के लोग उलाहना नहीं देंगे? क्या उलाहना देंगे? कि भगवान आया, गॉडफादर जिसको सारी दुनिया, हर धर्म के लोग, हर देश के लोग मानते है और उसको हमने नहीं पहचान पाया क्योंकि हमें भाषा ही नहीं आती है। तो एक भाषा ऐसी नियत बनी हुई है, कलियुग अंत में, जो विश्व की भाषा बनती है। और बाप, बाप के रूप में आता है।

Baba: Has the Father come as a world benefactor or as the benefactor of just India? (Someone said – world benefactor) If He speaks only one language, then will the people of the world, people who speak other languages of the world not complain? What will they complain about? (They will complain), God came, God the Father, whom people of the entire world, of every

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

religion, of every country accept, came and we were not able to recognize Him because we do not know the language at all. So, one such language is fixed at the end of the Iron Age, which becomes the world language. And the Father comes in the form of the Father.

बाप सारे विश्व का बाप है या सिर्फ भारत का है? (किसी ने कहा - सारे विश्व का है।) भारत का खास है, भारतवासियों के लिए खास है लेकिन आम कल्याण तो सारी दुनिया का होना है ना। कोई आत्मा ऐसी रह जावेगी जो मुक्ति को प्राप्त न हो, दु:खों से जिसकी मुक्ति न हो। ये दु:ख-दर्दों से मुक्ति का वर्सा दुनिया की हर आत्माओं को मिलेगा या नहीं मिलेगा? कैसे मिलेगा? जो बाप की भाषा है, वो बच्चा समझ सके। इसलिए ढेर सारे शब्द है। और भाषाओं के इतने शब्द नहीं आते हैं मुरली में और मुरली के क्लेरिफिकेशन में जितने अंग्रेजी भाषा के शब्द आते हैं ताकि जो विश्व भाषावासी हैं, वो विश्वपिता की भाषा को समझने में सहज हो जाए।

Is the Father, the father of the entire world or of just India? (Someone said – of the entire world) He is (the Father) especially of India, He is especially (benefactor) for the residents of India, but in general the whole world has to be benefited, hasn't it? Will any such soul remain who does not achieve *mukti* (liberation), who does not achieve liberation from sorrows? Will every soul of the world achieve the inheritance of liberation from sorrow and pain, or not? How will they achieve it? The child should be able to understand the language of the Father. That is why there are numerous words (in English). The words of other languages are not used as frequently in the *Murlis* and *Murli* clarifications as the words of English are used so that the people of the world who speak other languages can easily understand the language of the World Father

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info